आचार्य विद्यासागरजी की ब्रह्मचर्य स्थली श्रवणबेलगोला में संयम कीर्ति स्तम्भ का लोकार्पण

आचार्य वर्द्धमानसागरजी सहित अनेक आचार्य व शताधिक पिच्छीधारी रहे उपस्थित ।

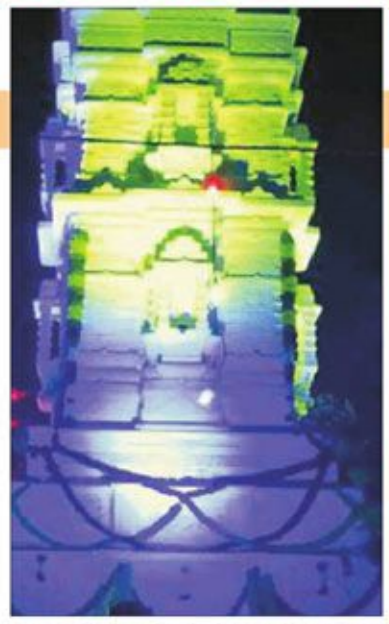

राजेन्द्र जैन 'बागो', इन्दौर । संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के संयम स्वर्ण जयंती वर्ष के अंतर्गत विश्व तीर्थ श्रवणबेलगोला के चन्द्रगिरि पहाड़ की तलहटी में विशाल 25 फीट उत्तुंग संयम स्वर्ण जयंती कीर्ति स्तम्भ का लोकार्पण सम्पन्न हुआ । राष्ट्रगौरव वात्सल्यवारिधि आचार्यश्री वर्द्धमानसागरजी महाराज सहित अनेक आचार्य-मुनिराज आर्यिका माताजी के सान्निध्य व जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्तिजी भट्टारक स्वामीजी के नेतृत्व में श्रायक श्रेष्ठी श्री अशोक-सुशीला पाटनी आर.के. मार्बल लिमिटेड किशनगढ़, महोत्सव की राष्ट्रीय अध्यक्षा सरिता एम.के.जैन सहित अनेक गणमान्य श्रेष्ठियों की उपस्थिति में सम्पन्न लोकार्पण समारोह अभूतपूर्व व अद्वितीय रहा ।

आचार्य श्री की कीर्ति फैलाना श्रावकों का कार्य, आचार्य वर्द्धमानसागरजी – समारोह को सम्बोधित करते हुए वात्सल्य वारिधि आचार्यश्री वर्द्धमानसागरजी महाराज ने कहा कि कीर्ति उसी की होती है जो धर्म और अध्यात्म के क्षेत्र में विशिष्ट कार्य करते हुए अपना जीवन जीते हैं । इस तीर्थ पर जैनधर्म की पताका गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी की प्रतिमा ने फैलाई वही अंतिम श्रुतकेवली आचार्य भद्रबाहु स्वामी बारह हजार मुनियों के साथ चन्द्रगिरि पर्वत पर गए थे, उस समय भद्रबाहु स्वामी ने साधना का अंतिम अध्याय चन्द्रगिरि पर्वत पर पूर्ण किया था । उसी भूमि पर बालक विद्याधर ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लेकर संयम साधना के पचास वर्ष पूर्ण किये, जो बहुत उल्लेखनीय है, उनकी धर्माराधना की कीर्ति को फैलाना श्रावकों का कार्य है, श्रावक समुदाय ने ही कीर्ति स्तम्भ का निर्माण कराया है, भट्टारक स्वामीजी ने बहुत दूरदर्शिता से निर्णय लिया है ।

सब कुछ है आचार्य श्री विद्यासागरजी के पास, पूज्य भट्टारक स्वामी – लोकार्पण अवसर पर जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्तिजी भट्टारक स्वामीजी ने अत्यन्त विनम्र भाव से कहा कि आचार्यश्री विद्यासागरजी का जीवन यदि हम देखें तो पाएंगे कि साधु जीवन में जो होना चाहिये वह सब आचार्यश्री के पास है उनके जीवन में संयम है, साधना है, लेखन है, अच्छे वक्ता है, धर्म प्रभावक है, साधुओं का बहुत बड़ा समुदाय उनके द्वारा दीक्षित है, अनेक तीर्थों के तीर्थ जीर्णोद्धारक है, धर्म प्रभावना की प्रेरणा देते हैं । आचार्यश्री सक्षम है । यह संयम का विश्वतीर्थ श्रवणबेलगोला है एक ओर गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी है दूसरी और यहां अनेक राजाओं ने दीक्षा लेकर समाधि को प्राप्त किया वह पवित्र पर्वत चन्द्रगिरि है । उसी पहाड़ की तलहटी में संयम स्वर्ण जयंती वर्ष में यह कीर्ति स्तम्भ का निर्माण हम सबको प्रेरणा देगा । यह हमारा कर्तव्य है कि उनकी कीर्ति को फैलाएं ।

श्रावक श्रेष्ठ अशोक-सुशीला पाटनी भाव विभोर हुए – देश में अपने तन-मन-धन का सदुपयोग कर मुनिराजों के प्रति अनन्य श्रद्धा भक्ति रखने वाले समन्वयकारी श्रावक श्रेष्ठी श्री अशोक-सुशीला पाटनी (आर.के. मार्बल) अत्यन्त भाव विभोर हो गए । उन्होनें कहा कि उनका जीवन धन्य हो गया । आज संयम की कीर्ति पताका सम्पूर्ण भारतवर्ष में स्थापित हो रही है । 52 वर्ष पूर्व आचार्य विद्यासागरजी महाराज ने जहां ब्रह्मचर्य व्रत लिया वह भूमि आज उनके जय-जयकारों से गुंजायमान है और इतनी बड़ी संख्या में संयमी विद्यमान है ।

आवाज के जादूगर राष्ट्रकवि अजय अहिंसा बाकल ने कहा कि अपने जीवन में ऐसा अभूतपूर्व आयोजन पहली बार देखा है । जब आचार्य भगवान की प्रशंसा में संयमी जीव भाव-विभोर हो रहे है । पूर्व संध्या पर ओजस्वी कवि चन्द्रसेन जैन के संयोजन में अनेक कवियों ने शानदार कविता पाठ किया । इस अवसर पर महोत्सव कमेटी व संयम जयंती महोत्सव कमेटी के पदाधिकारी उपस्थित थे ।

कीर्ति स्तम्भ में उल्लेखित है आचार्यश्री की जानकारी – संयम स्वर्ण जयंती वर्ष के अन्तर्गत निर्मित कीर्ति स्तम्भ में आचार्यश्री के जीवन की जानकारी के साथ महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी द्वारा आचार्यश्री से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए फोटो भी अंकित किये गए हैं । विगत 50 वर्षों में आचार्य श्री द्वारा 443 दीक्षाएं प्रदान की गई हैं जिसमें 120 निर्ग्रंथ मुनि, 172 आर्यिका माताजी, 151 ऐलक, क्षुल्लक शामिल है जो सभी युवा बाल ब्रह्मचारी हैं । यह अपने आप में अनोखा विश्व कीर्तिमान है ।

8 मार्च महिला दिवस

समाज का आधा हिस्सा कहीं जाने वाली महिलाएं आज भी अपने पूर्ण अस्तित्व व हक के लिए लड़ रही है । सदियों से अबला, दासी और न जाने किन किन सम्बोधनों से नवाजी जाने वाली महिला आज भले ही इन सबसे ऊपर उठ चुकी है, परंतु विभिन्न रूपों में पुरूषों के शोषण और अन्याय अभी जारी है । जीवन के हर पड़ाव में हमेशा ही पिता, भाई, पति या बेटे के रूप में किसी न किसी पुरूष के स्वामित्व को स्वीकार करना उसकी नियति माना गया है । बहुत कुछ समय के साथ बदला है पर ये स्थिति आज भी कमोबेश वैसी ही है । आज महिलाओं की स्थिति सुधारने, उन्हें पुरूषों के बराबर का दर्जा देने के बड़े बड़े दावे किए जाने के बावजूद कुछ खास फर्क नहीं आया है ।

इसकी सबसे बड़ी वजह पुरूषों की स्वामित्व वाली सोच है । सामान्य तो क्या आपको प्रगतिशील बताने वाले पुरुष भी महिलाओं के प्रति वही दोयम दर्ज की सोच ही रखते हैं। उच्च शिक्षित हो या कम पढ़े लिखे, शहरी हो या ग्रामीण, समृद्ध हो गरीब, महिलाओं के प्रति सभी का रवैया लगभग एक सा ही मिलता है । समाज में यूं तो महिलाओं का दर्जा बहुत ऊंचा दिखाया जाता है । शक्ति, बुद्धि, विद्या, आदि महान गुणों के प्रतीक स्वरूप, दुर्गा, काली, सरस्वती आदि देवियों की पूजा की जाती है । किंतु वास्तविकता इससे कहीं अलग है । आम जीवन में सम्मान और पूजा तो दूर महिलाओं का शारीरिक, मानसिक और आर्थिक शोषण इतने सहज सामान्य रूप में होता रहता है कि महिलाओं ने भी इसे अपनी नियति के रूप में स्वीकार लिया है । महिलाओं के प्रति लोगों की दोयम मानसिकता घर और बाहर, उनके कार्यक्षेत्र में भी खुले रूप से दिखाई देती है । बच्चियों की शिक्षा के क्षेत्र में आज बेटियां जिस तेजी से लड़कों से आगे निकलती दिखाई देती है वैसी प्रगति करियर क्षेत्र में नहीं दिखती । विवाह पूर्व बेटी कितना भी आगे बढ़ सकती है, किन्तु विवाह के बाद उसका करियर ससुराल वालों और पति की इच्छा के हवाले कर दिया जाता है जहां उसकी प्राथमिकता घर परिवार को संभालना होता है । क्या यह पति और पत्नि दोनों की सम्मिलित प्राथमिकता नहीं होनी चाहिए । बेटी और बहू को एक जैसा समझने के दावे करने

महिला दिवस पर महिलाओं के विषय में अनेक मुद्दे उठाए जाते हैं । महिला भ्रूण हत्या, दहेजप्रथा, दुष्कर्म, अपराध आदि अनेक ज्वलंत विषयों के बीच सामाजिक और पारिवारिक परिप्रेक्ष्य में महिलाओं की वर्तमान स्थिति का आंकलन करती एक विवेचना।

वाले भी बहू के घर में आते ही परम्पराओं और फायदे कानूनों की लंबी लिस्ट लेकर तैयार रहते हैं । अधिकांश लोग अपनी शर्तों पर बहू का जॉब कराना पसंद करते हैं । उस पर भी घर के लोगों का असहयोगात्मक और नकारात्मक वातावरण प्रतिभावान बहू को अपना कैरियर और महत्वाकांक्षाओं को दबाकर केवल गृहिणी ही बनकर रह जाने के बावजूद सफलता के शिखर पर चन्द महिलाएं ही पहुंच पाती हैं । हमारे अपने समाज में आज कितनी महिलाएं हैं जो अपनी प्रतिभा और योग्यता के अनुरूप अपने कार्यक्षेत्र में शिखर तक पहुँच सकी है । कार्यक्षेत्र में भी उनके साथ भेदभाव और असहयोग का व्यवहार किया जाता है । समान या अधिक योग्यता के बावजूद उन्हें पुरूषों से कम आंका जाता है । वेतन, प्रमोशन, अवकाश आदि देने में अक्सर महिलाएं शोषण का शिकार होती है । परिवार में एक शिक्षित कामकाजी बहू का दोहरा शोषण हो रहा है । घर परिवार और बच्चों के साथ साथ बाहर की जिम्मेदारी भी उन पर डाल दी गयी है । अपेक्षाएं तो बढ़ी हैं पर अधिकार नहीं । परिवार को आर्थिक सम्बल प्रदान करने के बावजूद उसे आर्थिक स्वतंत्रता नहीं मिलती, न ही निर्णय लेने का अधिकार। मान सम्मान तो नहीं उल्टे कामकाजी होने को लेकर घर के प्रति उसके समर्पण और निष्ठा को भी शंका की दृष्टि से ही देखा जाता है । कमाऊ बेटे और कमाऊ बहू को एक सा ओहदा कदाचित ही मिलता है । दोहरी जिम्मेदारियों और अपेक्षाओं के बोझ तले खुद को ठगा हुआ सा ही महसूस करती है स्त्री, दुःख की बात यह है कि केवल पुरुषों के द्वारा ही नहीं, स्त्रियां भी स्त्रियों का शोषण कर रही है । घरों में सास, बहू , देवरानी जेठानी के किस्से मशहूर हैं । परस्पर ईर्ष्या और द्वेष के कारण वे एक दूसरे को ही नुकसान पहुंचा रही है । इन सबका दुष्परिणाम पारिवारिक विघटन और दाम्पत्य जीवन में बिखराव के रूप में सामने आ रहा है जो कि आज के समाज की गम्भीर समस्या बनती जा रही है । कुल मिला कर शिक्षा का अधिकार मिलने से महिलाओं की सोच तो बदली है किंतु पुरुषों को महिलाओं की इस प्रगतिशील छवि को स्वीकार करने में अभी कुछ और वक्त लगेगा । जिस दिन यह होगा तभी महिला दिवस मनाने का उद्देश्य पूरा हो सकेगा ।

– अनुपमा जैन, सहसंपादिका

बायोडॉटा प्रारुप का विवरण

1.	क्रमांक	9.	वर्ण
2.	प्रत्याशी का पूरा नाम	10.	व्यवसाय
3.	स्वयं / मामा का गोत्र	11.	वार्षिक आय
4.	जन्म दिनांक	12.	कुंडली मिलान
5.	जन्म समय (रिमवे समयानुसार)	13.	मंगली
6.	जन्म स्थान	14.	पत्र व्यवहार का पता
7.	शिक्षा	15.	फोन / मोबाईल नं.
8.	कद / वजन	16.	प्रत्याशी का ईमेल

प्रत्याशी का नवीन फोटो

1. 001
2. **अंकित केवलचंद जैन**
3. बिलौआ/भंडारी
4. 12.09.1991
5. 22.52
6. ककरहटी, पन्ना
7. बी.ए.
8. 5'6''
9. साफ
10. गल्ला व्यापारी
11. 6 अंको में
12. नहीं
13. नहीं
14. ककरहटी जिला पन्ना
15. 8959231857, 9993404942

1. 002
2. **नितेश जयकुमार जैन**
3. नगरपुरिया/गोट
4. 21.01.1987
5. 01.00
6. ललितपुर
7. एम.बी.ए., एलएलबी
8. 5'7''
9. गेहुँआ
10. सर्विस-इन्दौर
11. 6 लाख
12. हाँ
13. –
14. नितिन मेडिकल स्टोर, जखौरा ललितपुर
15. 9005048900, 9455888885

1. 003
2. **आकाश प्रमोद कुमार जैन**
3. सेठ/फणीश
4. 24.06.1992
5. 21.45
6. जबलपुर
7. बी.ई (ई.सी.)
8. 5'10''
9. गोरा
10. सर्विस
11. 5.00 लाख
12. हाँ
13. आंशिक
14. 422, राठी कालोनी, बलदेव बाग जबलपुर
15. 9479495556

1. 004
2. **मेघा विनोदकुमार जैन**
3. फणीश/बिलौआ
4. 13.08.1992
5. 05.10
6. कटेरा
7. एम.ए.
8. –
9. गोरा
10. –
11. –
12. हाँ
13. –
14. ग्राम पोस्ट कटेरा मऊरानीपुर जिला झांसी
15. 9956389562, 8756492791

1. 005
2. **साहिबा पारस जैन**
3. वैद्य/गुड़ारे
4. 21.03.1994
5. 8.45
6. जबलपुर
7. एम.कॉम
8. 5'2''/51कि.
9. गोरा
10. शासकीय सर्विस
11. 2 लाख
12. –
13. नहीं
14. नवआदर्श कालोनी जबलपुर
15. 8989497127, 9329475006

नोट – कान में मशीन लगाते है ।